

- 44 अगस्त्यो ऽगस्तिः पीताब्धिर्वातापिद्विद्वटोद्भवः ॥ १२२ ॥ १०
 45 मैत्रावरुणिराग्नेय और्वशेयाग्निमाहृतौ ॥ १२३ ॥ १०
 46 लोपामुद्रा तु तद्गार्पा कौषीतकी वरप्रदा ॥ १२४ ॥ १०
 47 मरीचिप्रमुखाः सप्तर्षयश्चित्रशिवणिडिनः ॥ १२५ ॥ १०
 48 पुष्पदत्तौ पुष्पवत्तावेकोक्त्या शशिभास्करो ॥ १२६ ॥ १०
 49 राहुग्रासो ऽर्केन्दोर्ग्रह उपराग उपप्लवः ॥ १२७ ॥ १०
 50 उपलिङ्गं तरिष्टं स्यादुपसर्ग उपद्रवः ॥ १२८ ॥ १०
 51 अत्रन्यमीतिरुत्पातो ॥ १२९ ॥ १०
 52 वद्व्युत्पात उपाहितः ॥ १३० ॥ १०
 53 स्यात्कालः समयो दिष्टानेहसौ सर्वमूषकः ॥ १३१ ॥ १०
 54 कालो द्विविधो ऽवसर्पिण्युत्सर्पिणीविभेदतः ॥ १३२ ॥ १०
 55 सागर्कोटिकोटीनां विंशत्या स समोप्यते ॥ १३३ ॥ १०
 56 अवसर्पिण्यां षडरा उत्सर्पिण्यां त एव विपरीताः ॥ १३४ ॥ १०
 57 एवं द्वादशभिरैर्विवर्तते कालचक्रमिदम् ॥ १३५ ॥ १०
 58 तत्रैकात्तसुषमारश्चतस्रः कोटिकोटयः ॥ १३६ ॥ १०

44. 45. Agasti (9 W.). — 46. Agasti's Gemablin (3 W.). —
 47. Die 7 Weisen oder der grosse Bär (2 W.). — 48. Sonne und
 Mond, durch ein Wort ausgedrückt (2 Duale tantum). — 49. Sonnen-
 oder Mond-Finsterniss (3 W.). — 50. 51. Unglückverheissendes Natur-
 ereigniss (7 W.). — 52. Feuer-Phänomen (2 W.). — 53. Zeit (5 W.). —
 54. 55. Die Zeit ist zweitheilig durch Unterscheidung der Avasar-
 pinî und Utsarpinî und erreicht einen Abschluss nach Verlauf
 von 2000,000000,000000 von sâgara's. — 56. 57. In der Avasar-
 pinî sind 6 Ara's, so auch in der Utsarpinî, aber in umgekehrter
 Ordnung. Auf diese Weise dreht sich dieses Zeitenrad mit den 12
 Speichen (ara's) herum. — 58 — 63. Die 1te Speiche (ara) im Zei-